ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 8 | MAY - 2017

REVIEW OF RESEARCH

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कहानियों में साम्राज्यवाद,उपनिवेशवाद एवं सामंतवाद विरोधी स्वर

सुनील कुमार राय
सीनियर रिसर्च फ़ेलो हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय.

प्रस्तावना :

निराला का साहित्य अपने आरंभ से ही प्रगतिशील चेतना से अनुप्रमाणित रहा है। उनका समग्र साहित्य जनसामान्य की पक्षधरता का साहित्य है। उनकी प्रगतिशील चेतना का, प्रशस्त मानवीय एवं सामाजिक सरोकारों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक रहा है। वे महज काव्य के क्षेत्र में चली आ रही रूढ़ियों को ही नहीं तोड़ते वरन सामाजिक जीवन में भी व्याप्त असमानता एवं शोषणमूलक सामंती मानसिकता पर भी जबरदस्त प्रहार करते हैं। अपने समग्र रचना विधान में दलितों, गरीबों किसानों, मेहतनकश मजदूरों, अभावग्रस्तों, वंचितों, सन्तप्तों एवं स्त्रियों केजीवन की वास्तविकता को एवं सदियों सेचले आ रहे उनके शोषण चक्र के विभिन्न पहलुओं को बड़ी संजीदगी से चित्रित करतेहैं। वे उस समूची सामंती मानसिकता पर चोट करते हैं, जो योग्यता को दरकिनार करके अपने जातीय श्रेष्ठता के दंभवश शोषण को प्रश्रय देती है। वे लिखते हैं- वह कौन सी वृत्ति है, जो योग्य को योग्य नहीं समझती ? अपनी महामूर्खता, महानीचता को केवल जन्मजात अधिकार के दावे पर दबा रखती है। इसी का नाश करना है।''[1]

निराला का साहित्य उपेक्षितों, वंचितों एवं संघर्षशील किसानों का साहित्य है, वे सदियों से चले आ रहे गरीबों के शोषण पर गहरी वितृष्णा और क्षोभ व्यक्त करते हैं। वे जानते है कि समाज में जो भी अव्यवस्था है, उसके मूल में है, धन का पूँजीपतियों के चंगुल में आना, उसका वर्ग विशेष, सुविधाभोगी वर्गो के पास संकेन्द्रित होना। अपनी एक प्रसिद्ध गजल में वे लिखते है-

''भेद कुल खुल जाय वह सूरत हमारे दिल में है
देश को मिल जाय, जो पूँजी तुम्हारे मिल में है।''[2]

निराला का समग्र गद्य साहित्य ब्रिटिश उपनिवेशवाद के साथ-साथ उन सभी सामन्तवादी, पूँजीवादी व साम्राज्यवादी ताकतों का मुखर विरोध करता है। जिसके कारण देश का जनसामान्य हाशिए पर पहुँच गया था। वे 1929 में लखनऊ से निकलने वाले पत्र 'सुधा' से जुड़े और तब से लेकर अपने जीवन के अंत तक वे इन सभी का विरोध करते रहे। वे संपादकीय में हमेशा राजनीतिक-सांस्कृतिक विषयों पर लिखते रहे। भारत के बहुत से पूँजीपति और उदारपंथी नेतागण सोचते थे कि अंग्रेज भारत का विकास कर रहे है। यहां राष्ट्रीयभावना जगाने में अंग्रेजी शासन की महत्वपूर्ण भूमिका है। लेकिन निराला ने उसी समय यह बात रखी थी कि अंग्रेजों की नीति भारत को खेतिहर उपनिवेश बनाकर रखने की है, यहां के उद्योग-धन्धों को विकसित करने की नहीं।

साम्रज्यवाद मूलतःआर्थिक शोषण की व्यवस्था है, जिसमें पूँजी की सत्ता ही सार्वभौमिक होती है। भारत का आर्थिक शोषण जारी रखने के लिए साम्राज्यवाद ने जो नीति अपनाई, उसकी विशेषता थी कि एक ओर वह उच्च वर्गो को शासन में भाग लेने का लालच देता था, दूसरी ओर जनता में क्रांति की आग न भड़कने देने के लिए दमन का सहारा लेता था। डॉ. रामविलास शर्मा, इसको स्वीकार करते हुए लिखते है- ''निराला साम्राज्यवाद के आर्थिक रूप का विश्लेषण करते हैं, उसके राजनीतिक दाँव पेंच की छानबीन करते हैं, साम्राज्यवाद से भारतीय सामंतों के गठबंन को जांचते है। इस चैखटे में जाति-प्रथा, हिंदु-मुस्लिम एकता, राष्ट्रभाषा आदि समस्याओं पर विचार करते है।''[3]इसी क्रम में रामविलास शर्मा स्वाधीनता की निराला की मांग के बारे में लिखते है- ''निराला ने ब्रिटिश

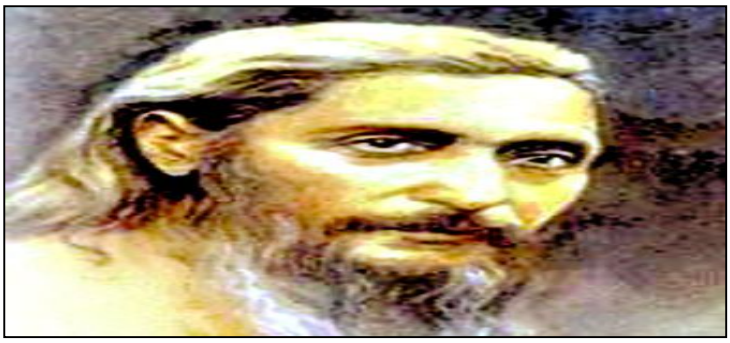

सुधारों का विरोध किया, पूर्ण स्वाधीनता की मांग का समर्थन किया, दमन की बर्बरता का चित्र खींचकर जनता को संघर्ष के लिए प्रेरित किया।''[4]

निराला के स्वाधीनता आंदोलन की धुरी-किसान क्रान्ति अर्थात साम्राज्यवाद के मुख्य समर्थ सामंतों के खिलाफ जमीन पर अधिकार करने वाले किसानों का संघर्ष है। उन्होंने इस आन्दोलन की सार्थकता किसानों की मुक्ति में बताया है। निराला अपने साहित्य के माध्यम से पूरे इतिहास को बदलने का प्रयास कर रहे थें। कई बार ऐसा होता है कि इतिहास के विरूद्ध इतिहास स्वयं खड़ा हो जाता है और प्रगतिकामी लोग समाज में निस्सहायता का अनुभव करने लगते है। निराला वही इतिहास रचकर इतिहास बन रहे थे। वे एक स्वाधीन देश ही नहीं, स्वाधीन समाज और स्वाधीन संस्कृति के लिए भी लड़ रहे थे, जो लड़ाई कठिन होती जा रही थी।

निराला ऐसे समय में संघर्ष कर रहे थे, जब भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को महात्मा गांधी जैसा एक नेतृत्वकर्ता राजनेता मिल चुका था। गांधी ने भी साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद के सफाये के लिए अपने ढंग से लड़ाई शुरू कर दी थी।1909 में उन्होंने 'हिंद स्वराज' जैसे महत्वपूर्ण विजन की रचना की। जिसमें उन्होंने लिखा था- ''पहले लोग मार-मार कर गुलाम बनाये जाते थे, पर अब लोग अपने आप गुलामी की जंजीर पहन लेते है धन और ऐशो आराम के लोभ से।''[5]गांधी का यह वक्तव्य बताता है कि किस प्रकार उस समय के सभी साहित्यकार, चिंतक और राजनीतिज्ञ संपूर्ण सामंती व्यवस्था के विरूद्ध ही मुखर नहीं थे, अपितु औपनिवेशक आधुनिकीकरण को भी संदेह से देख रहे थे। गांधी स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख सूत्रधार थे किन्तु सामन्त-विरोधी किसान संघर्ष के माध्यम से ब्रिटिश शासन के सामाजिक आधार को तोड़ने के पक्ष में वह नही थे। निराला का गांधी से मतभेद यही से शुरू होता है। क्योंकि गांधी की विचारधारा किसान के प्रति सहानुभूति तो दिखाती है लेकिन किसान-जमींदार का भेद दूर नहीं करती। अछूतों के प्रति भाव विह्वल तो होती है, लेकिन वर्णव्यवस्था की समर्थक भी है। ऐसे में उनका निराला से मतभेद होना स्वाभाविक ही था। क्योंकि निराला रूढ़ियों का पूरी तरह से छोड़ने के पक्षधर थे, वहीं गांधी उनसे समझौता करने की नीति अपनाते थे। गांधी की यही समझौतापरकनीति हिंदू-मुस्लिम एकता के संदर्भ में भी रही। निराला जहां धार्मिक रूढ़ियों को समग्रता से त्यागकर हिंदुमुस्लिम में एकता स्थापित करना चाहते थे, वहीं गांधी दोनों को साथ लेकर लना चाहते थे। यही गांधी और निराला के मतभेद के कारक बने।

निराला राजनीतिक स्वतंत्रता को जहां साधन मात्र मानते थे, वहीं आर्थिक स्वतंत्रता को साध्य। क्योंकि राजनीतिक परतन्त्रता के कारण ही देश की आर्थिक परवशता, दैन्य व दु ख की परिणति होती है। व्यापार वृत्ति पर आधारित अंग्रेजी शासन का उद्देश्य ही देश की आर्थिक व्यवस्था को ठप करना था। अंग्रेज देश का कच्चा माल खरीद कर अपने कारखानों में बने माल की खपत का क्षेत्र बनाते है, अतएव देश की आर्थिक उन्नति संभव ही नही।

निराला की क्रान्तिकारी विचाराधारा का स्रोत वेदान्त है, जिसकी प्रगतिशील व्याखा स्वीकार करते हुए वे सामाजिक और राजनीतिक हर क्षेत्र में रूढ़िवाद का विरोध करते है। निराला की देश-प्रेम की भावना उन्हें सिखाती थी कि पुरानी जर्जर समाज-व्यवस्था को मिटा दिया जाय, इस देश को आधुनिक शक्ति संपन्न राष्ट्र बनाया जाए, जिसमें विकसित देशोंकी तरह साहित्य और विज्ञान का विकास हो।

जाति-पाँति का भेदभाव भी सामन्ती-व्यवस्था की ही उपज है। भारत में अंग्रेजी शासन से पूर्व वर्णव्यवस्था छिन्न-भिन्न होने लगी थी। लेकिन अंग्रेजों ने जाति-पाँति और ऊँच-नीच के भेदभाव को अपनी राजनीतिक सत्ता के प्रमुख सामाजिक आधार के रूप में प्रश्रय देते हुए, सामन्ती व्यवस्था को और मजबूत करने के दाँव-पेंच अपनाये। जिसके कारण सामाजिक रूढ़ियां और टूटने के बजाय मजबूत हुई। अंग्रेजी शासन में देशी सामन्तों और विदेशी उपनिवेशवादी ताकतों के दोहरे शोषण से भारत की निम्न जातियां बुरी तरह परेशान थी। उनके इस शोषण को देखकर ही निराला ने इनका मुखर विरोध किया था।

इसी क्रम में निराला का मानना है कि-''व्यापक सामन्त-विरोधी क्रान्ति के बिना भारत का साम्राज्य-विरोधी आन्दोलन कभी पूरी तरह सफल नहीं हो सकता। वर्णव्यवस्था के विरूद्ध निराला का एकप्रिय तर्क यह था कि पराधीन देश के नागरिकों में न ब्राह्मण होते है, न क्षत्रिय दास होने के कारण सब समान रूप से शूद्र हो जाते है।''[6]इन्हीं सभी बातों के आधर पर यह कहा जा सकता है निराला युग दृष्टा थे उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से भी सर्वथा यह बताने कि किस प्रकार आन्दोलन करके इस सामंती एवं साम्राज्यवादी व्यवस्था से मुक्ति पायी जा सकता है। 'चतुरी चमार' कहानी में उन्होंने स्पष्ट किया है कि किसान आंदोलन तभी सफल होगा, जब सभी वर्णो के किसान एकजुट हो जाएगें। निराला की दृष्टि में इस व्यापक सामाजिक क्रान्ति के बिना देश का राजनीतिक आंदोलन शक्तिशाली नहीं हो सकता था।

निराला कर्मबंधन से मुक्तिकी भी वकालत करते है। वे कर्मकाण्डों एवं आडम्बरों से मुक्ति केलिए हमेशा जागरूक रहते थे। उन्होंने कर्मकाण्ड व धर्म में भेद करते हुए बताया कि- ' ज्ञानजन्य कर्म ही श्रेष्ठ है, अज्ञान जन्य कर्मरूढ़ि का पालन मात्र है।वर्तमान युग में मनुष्य को अपनी बुद्धि के अनुसार यथोचित निर्णय लेकर काम करना चाहिए, हर बात में शास्त्र दुहराना पराधीनता का सूचक है'[7]इस प्रकार हम देखते है कि अन्य समस्याओं की तरह रूढ़ियों से संघर्ष की समस्या भी निराला के लिए राष्ट्रीय उत्थान की समस्या का एक अंग थी। उन्होंने यह भी कहा था कि - 'भारत को आधुनिक प्रगतिशील राष्ट्र बनाने के क्रम में अन्य आधुनिक राष्ट्रों की तरह पुरानी प्रथाओं में आमूल परिवर्तन करना होगा,अन्यथा वह प्रगति की दौड़ में पिछड़ जाएगा।'[8]यह निराला की सांस्कृतिक क्रान्ति है। ज्ञान का आश्रय लेकर तमाम सामाजिक रूढ़ियों को समाप्त करके समाज का नव-निर्माण करना है। ऐसा समाज जिसमें स्त्रियों का पुरूषों के समान और शूद्रों को द्विजों के समान उन्नति करने का अवसर मिले।

निराला की प्रगतिशील चेतना के व्यापक परिदृश्य में सामान्य से सामान्य व्यक्ति कीप्रतिष्ठा की गयी है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है- 'देवी' कहानी, जिसमें निराला ने लिखा है- ''वह सांवली थी, दुनिया की आंखों को लुभाने वाला उसमें कुछ न था...मेरी आंखों को उसमें वह रूप देख पड़ा जिसे कल्पना में लाकर मै साहित्य मे लिखता हूँ केवल रूप ही नहीं, भाव भी।''[9]समाज में पगली समझी जाने वाली स्त्री के प्रति असीम करूणा व्यक्त करके निराला ने एक नवीन यथार्थवादी दृष्टि प्रदान की। यहीं नही वे समाज की ऐसी परिकल्पना करते हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को समानता, स्वतंत्रता एवं अधिकार मिल सके। इस कहानी की निम्न पंक्तियां देखने लायक है''यह सड़क क्या मोटर-तांगों व इक्के वालों के लिए ही है? इन्हें देखकर मैं खड़ी हो जाऊँ, मुझे देखकर ये क्यों न खड़े हो?''[10]

निराला यही प्रश्न अपने पात्र 'देवी' जिसे दुनिया पगली कहती है। द्वारा करा कर समूची सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर कर देते है। समाज की सर्वाधिक उपेक्षित 'पगली स्त्री' के प्रति प्रेम एवं उसकी प्रतिष्ठा की, उसकी अस्मिता की मूल्यवत्ता निराला जैसा साहित्यकार ही दृढ़ता से प्रतिपादित कर सकता था। यहां वे उन सभी साम्राज्यवादी, सामंती एवं पूजीवादी चक्रों से मुक्त समाज की स्थापना की परिकल्पना करते है।

अपने एक अन्य कहानी 'कुल्ली भाट' में निराला तमाम चारित्रिक दोषों के बावजूद भी कुल्ली को ही चरित्रनायक के रूप में प्रस्तुत करते है। उसका मुख्य कारण यह है कि कुल्ली भाट ने 'अछूतों के उद्धार'के निमित्त एक पाठशाला खोल दिया था। कुल्ली की पाठशाला, में निराला जब पहुंचतें हैं, तो दलितों के बच्चे निराला के सामने फूल रख देते है, मारे डर के हाथ में नहीं देते, क्योंकि निराला को नहाना पड़ता। निराला का हृदय ग्लानि, क्षोभ, दया, करूणा एवं विद्रोह से एक साथ भर जाता है और वे समूची सामंती संस्कृति का भयावह यथार्थ सामने चित्रितकुल्ली भाट' में निराला ने लिखा है.....इसी समय बिना स्तवके, बिना मंत्र के, बिना वाद्य, बिना गीत के, बिना बनाव, बिना सिंगार वाले पासी, धोबी और कोरी दोनों में फूल लिए हुए मेरे सामने आकर रखने लगे। मारे डर के हाथ पर नहीं दे रहे थे कि कहीं छू जाने पर मुझे नहाना होगा। इतना नत, इतना अधम बनाया है, मेरे समाज ने उन्हें...लज्जा से मैं वहीं गड़ गया। वह दृष्टि इतनी साफ थी कि सब कुछ देखती है। वहां चालाकी नहीं चलती। ओफ कितना मोह है।मैं ईश्वर, सौन्द्रर्य, वैभव और विलास का कवि हूँ। फिर क्रातिकारी।''[11]इतना बड़ा निरपेक्ष व्यक्तित्व कहां मिलेगा। उन्होंने उसी समाज की भर्त्सना की है, जिसमें वे पैदा हुए थे।

शंभुनाथ ने अपनी किताब 'संस्कृति की उत्तर कथा' में अंबेडकर के एक प्रश्न का जिक्र किया है, वह इस प्रकार है- ''अंबेडकर ने एक बार सवाल किया था- ''ब्राम्हणों ने कोई वाल्टेयर क्यों नही पैदा किया? वाल्तेयर में मानसिक ईमानदारी थी, जिसके कारण वह जिस कैथोलिक चर्च में पला था, उसी के सिद्धांतों के विरूद्ध उठ खड़ा हुआ था।''[12]आगे इसी क्रम में शंभुनाथ लिखते है- ''निराला ने अपनी जाति के संस्कारों और रीतयों का जिंदगी भर मखौल उड़ाया, ब्राम्हण के घर की घी की कचौड़ी छोड़कर दलित के घर में तेल की गर्म पकौड़ी खाई।.....यह वर्णव्यवस्था से उनके 'आउट ड्राप' होने की गर्व भरी आत्म स्वीकृति है। वेदांत के प्रति आकर्षण के बावजूद उपयुक्त बेगानेपन ने निराला को ब्राम्हण समाज का वाल्तेयर बना दिया था।''[13]यह बात निराला पर विल्कुल सही बैठती है। इसके साथ ये भी लगता है कि अंम्बेडकर ने 'कुल्ली भाट' पढ़ा होता, तो शायद वे यह प्रश्न नहीं करते। कुल मिलाकर निराला अपने सभी कहानियों में साम्राज्यवाद, सामंतवाद व उपनिवेशवाद से लड़ने के लिए स्वयं को एक पात्र के रूप में प्रस्तुत कर समाज के प्रयोगशाला में स्वयं परपरीक्षण करते है।

---

[1]सुधा,सं. निराला, पृष्ठ-23
[2]निराला रचनावली, पृष्ठ-137
[3]निराला की साहित्य साधना भाग-2, भूमिका से
[4]वही, पृष्ठ-15
[5]हिन्द स्वराज, मोहनदास करमचंद गांधी, पृष्ठ-21
[6]निराला की साहित्य साधना, भाग-2, पृष्ठ-31
[7]वही, पृष्ठ-249
[8]वही, पृष्ठ-253
[9]चतुरी चमार, पृष्ठ-43
[10]वही, पृष्ठ-47
[11]निराला रचनावली, भाग-4, पृष्ठ-96
[12]संस्कृति की उत्तर-कथा, शम्भूनाथ, पृष्ठ-15
[13]वही, पृष्ठ-15